बस एक बार.....

अपने पांच साल के बालक को इसी साल एक नर्सरी स्कूल में दाखिला कराया हूं। परन्तु दिक्कत यह है कि स्कूल हमारे घर से लगभग ३५ कि.मी. दूर है। स्कूल अच्छा है इसलिए अधिक फीस हाने के बावजूद इसी स्कूल में दाखिला कराया। स्कूल की टाइमिंग सुबह नौ बजे से दोपहर तीन बजे है। हम सुबह नौ बजे से पहले तैयार होकर एक साथ घर से निकलते हैं, मैं अपने आफिस चला जाता हूं तथा मेरी पत्नी बच्चे को लेकर स्कूल चली जाती है। तथा दोपहर तीन बजे स्कूल की छुट्टी होने पर बच्चे को लेकर सीधे घर आ जाती है। हर शनिवार तथा सप्ताह में एक दो दिन मेरी छुटटी होने पर अथवा छुट्टी लेकर मैं बच्चे को लेकर स्कूल जाता हूं। घर दूर होने के कारण बार–बार आना जाना नहीं हो पाता इसलिए हम स्कूल का सामने बगीचे के लान में टाईम पास कर लेते है। ऐसा अनेक बच्चों के माता पिता जिनका घर दूर है, करते है।

मिसेज भाटिया की बच्ची भी उसी स्कूल में हमारे बच्चे की क्लास मेट है। उनका घर दूर होने के कारण वह भी हमारी तरह सुबह नौ बजे आती है और छुट्टी होने पर दोपहर तीन बजे अपने बच्चे को लेकर घर जाती है। इस बीच मेरी पत्नी और मिसेज भाटिया स्कूल के सामने लान में बैठकर अपना समय व्यतीत करते हैं। जिस दिन मेरी पत्नी की जगह मैं स्कूल जाता हूं, उस दिन मिसेस भाटिया काफी उदास हो जाती है। क्योंकि अकेले अकेले उनका भी समय पास नहीं होता। दूसरी महिलाएं भी वहां होती हैं पर न जाने क्यों वो मेरी पत्नी के अलावा और किसी से ज्यादा मिक्सअप नहीं होती।

© 2008, www.antarvasna.com and Indian Porn Empire

मिस्टर भाटिया का अपना लोहे का बहुत बड़ा कारोबार है तथा वो सुबह ७ बजे फैक्टरी के लिए निकल जाते हैं तथा देर रात लौटते हैं। इसलिए मिसेस भाटिया को ही प्रतिदिन अपने बच्चे को लाने ले जाने के लिए आना पड़ता है। मिसेस भाटिया की उम्र लगभग २६—२७ साल होगी। वह बेहद गोरी, कद करीब ५'३''। लंबे घने घुंघराले बाल और दिखने में बेहद खूबसूरत व कमसिन थी। वह महंगे सलवार सूट में ही आती थी। एक अभिजात्य वर्ग की चमक उसके चेहरे पर साफ झलकता था। कभी कभी वो अपने बालों का जूड़ा बनाकर आती थी तो और भी अधिक खूबसूरत दिखती थीं। मैं ३५ वर्षीय सांवला, कद ५'५'' वजन ६५ कि. ग्रा. एक साधारण कद काठी का मध्यम वर्गीय परिवार से हूं। स्वभाव से शर्मिला एवं संकोची होने के कारण सहसा किसी से मिलने जुलने में कतराता हूं। जिस दिन मैं स्कूल जाता हूं तो सामान्यत: एक—आध पत्रिका अपने साथ जरूर रखता हूं और बच्चे को स्कूल में छोड़कर बगीचे के लान में किसी एकान्त जगह पर पेंड के नीचे बैठकर पढ़ता रहता हूं। बीच—बीच में पुरूषजन्य निर्बलता के वशीभूत तिरछी निगाहों से मिसेज भाटिया की ओर जरूर देख लेता हूं और यदि कभी हमारी नजरें मिल गई तो मत कहिए मारे शर्म के मेरी हालत पतली हो जाती है। पता नहीं क्या सोच रही होगी वो मेरे बारे में?

इसी तरह दिन बीतने लगे। ....एक माह....... दो माह........ तीन माह ....। इस बीच मिसेस भाटिया से मेरी थोड़ी बहुत बात होने लगी थी। वो ऊपर से जितनी गंभीर नजर आती थी उतनी थी नहीं। शुरूआत उसी ने की थी। एक दिन शनिवार को वो चिकन वर्क वाला गुलाबी कुर्ता और प्रिंटेड सलवार में आई थी। उसने कुर्ते के साथ मैच करता हुई गुलाबी कांच की चुड़ियां भी पहन रखी थी। उस दिन वो बेहद खूबसूरत दिखाई दे रही थी। यह महज संयोग था या कुछ और उस दिन हमारी निगाहें चार—पांच बार मिली। दरअसल मैं यह देख रहा था कि वो मेरी ओर देख रही है या नहीं! संभवत: उसने भी यही सोचा हो। उस दिन वो खुद मेरे पास आई और मेरा अभिवादन कर मुझसे कहा— ''भाई साहब क्या पढ़ रहे हैं?'' मैं हकला गया, बोला— ''इ..इंडिया टूडे'' यह कहकर मैंने पत्रिका उसकी ओर बढ़ा दिया। उसने मेरे हाथ से पत्रिका लेकर खड़े—खड़े ही दो—चार पन्ने पलटे, और पत्रिका मुझे वापस कर दिया। मेरे मुह से अनायास निकल गया— ''बैठिये ना'' उसने मुस्कुराकर अर्थपूर्ण नजरों से मेरी ओर देखा और बहुत ही मधुर और कोमल स्वर में विनम्रता पूर्वक कहा—''आज नहीं ... फिर कभी।'' यह मेरा उससे पहला वार्तालाप था। उस दिन मैं रात भर नहीं सो सका था। अगले शनिवार को फिर उससे मुलाकात हुई। हम लोग काफी देर साथ बैठे गपशप किये। फिर तो ये हमेशा का रूटीन हो गया। हम हर शनिवार को साथ रहते और आपस में घर परिवार और इधर उधर की बातें किया करते। अब हम काफी खुल चुके थे। उसने मुझे बताया कि उनके पति अपने परिवार के भौतिक सुख साधनों का तो बहुत खयाल रखते थे परन्तु अपनी पत्नी के शारीरिक प्यास को मिटाने में विशेष रूचि नहीं लेते हैं। जिसका कारण संभवत: उनका अपने व्यवसाय में अत्यधिक शारीरिक व मानसिक परिश्रम और प्रतिदिन देर रात को बहुत अधिक शराब पीकर घर लौटना था। मिसेस भाटिया के पहल करने पर ही कभी कभी उनमें संभोग संभव हो पाता था वह भी औपचारिकता जैसा। मिसेस भाटिया ने बताया कि उन्हें कभी भी सेक्स की चरम सीमा का अनुभव नहीं हो पाया। संभवत: मेरी पत्नी ने मिसेज भाटिया के साथ हमारे सेक्स संबंधों की चर्चा की होगी, और बताया होगा कि सेक्स के मामले

© 2008, www.antarvasna.com and Indian Porn Empire

में मैं अपनी पत्नी को कैसे नेस्तनाबूत कर देता हूं और कैसे हम रात भर विभिन्न आसनों में सेक्स का आनन्द उठाते है क्योंकि इधर कुछ दिनों से मैं महसूस कर रहा था कि मिसेस भाटिया मुझसे खुलकर बात करने लगी थी और जैसे हर शनिवार को वो मेरी प्रतीक्षा किया करती थी। कभी बात—बात मे किसी बहाने से वो मेरा स्पर्श भी कर लेती थीं। इधर उसके लिबास में भी कुछ परिवर्तन मैं महसूस करने लगा था। अब पहले की तुलना मे उसका सलवार कमीज अधिक टाइट नजर आने लगी थी। जिससे उसके सीने के उभार के साथ साथ पेट और कुल्हे स्पष्ट दिखने लगे थे। उसके कुर्ते के भीतर से ब्रा साफ नजर आती थी। यह सब देखकर मेरा मन भी डोलने लगता था।

इसी तरह तीन माह और बीत गये। माह दिसम्बर की एक शनिवार। ठंड काफी पड़ने लगी थी। हल्का—हल्का कोहरा छंटने लगा था। मैं स्कूल पहुंचा, देखा मिसेज भाटिया आसमानी सलवार कुर्ते में मेरून शाल ओढ़कर मानो मेरा ही इंतजार कर रही है। उसने अपने घ ाने काले घुंघराले बालों को जूड़े की शक्ल में बांध रखा था और इतनी गजब की खूबसूरत लग रही थी कि लफ्जों में बयां करना मुमकिन नहीं। वह मुझे एक ओर ले गई और कहा कि आज आपको मेरी एक बात माननी होगी। उसकी आंखों में शरारत साफ झलक रही थी। मतलब? मैंने पूछा। उसने कहा—आज कुछ पल मैं आपके साथ जीना चाहती हूं। एक आनन्दमिश्रित आश्चर्य से मैंने उनकी ओर देखा और पूछा— मगर कैसे ? कहां..? इसकी चिन्ता आप न करें, मैंने पास के लॉज में एक कमरा बुक कर लिया है। — उसने कहा। मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखकर कहा— तो......... तो क्या चलिये, अभी साढ़े नौ बजे हैं। अपने पास ढ़ाई बजे तक का समय है।......... सोच क्या रहे हैं.............. चलिए जल्दी। यह कहकर उसने लगभग खींचते हुए मुझे अपने कार के पास ले गई और दरवाजा खोलकर खुद ड्राइविंग सीट पर बैठ गई। पांच मिनट में हम एक आलीशान होटल के सामने खड़े थे। वह एक थ्री स्टार होटल था। काउन्टर से उसने रूम की चाबी ली और हम तीसरे मंजिल पर एक आलीशान डिलक्स डबल बेड रूम में थे। उसने बैरे से कुछ कहा। थोड़ी देर में बैरा शैम्पेन की एक बोतल, दो गिलास और कुछ स्नैक्स रख गया। उसने अपना शाल एक ओर फेंककर शैम्पेन के दो गिलास बनाए और एक मेरी ओर बढ़ा दिया। मेरे मना करने पर उसने कहा — आज पी लीजिए, मेरी खातिर, मैने डरते डरते गिलास उसके हाथ से ले लिया और एक ही सांस में पूरा गिलास खाली कर दिया। शराब ने अपना काम करना शुरू कर दिया था और मैंने भी। मैंने मिसेस भाटिया को अपने सीने में भींच लिया और उसके होठों पर अपने हांेठ रख दिए। वो कसमसाई और फिर उसने में मुझ पर चुम्बनों की बौछार सी करने लगी। मैने उसके कुर्ते के हुक को खोलकर ऊपर उठा दिया और उसके संगमरमरी शफ्फाक बदन को देखता ही रह गया। मैं उसे बिस्तर पर लिटाकर अपनी उंगलियों और होंठों से उसके पूरे बदन को चूमने लगा। वो खुशी और आनन्द से छटपटाने लगी। फिर उसने खुद ही अपने ब्रा का हुक खोलकर अपने बदन से अलग कर दिया। मैंने उसके दोनो सुडौल उरोजों से खेलना शुरू कर दिया। मैंने उसके विशाल दोनों उरोजों के चारों ओर अपनी दोनो हथेलियों को नीचे से ऊपर तक दाहिने से बाएं आहिस्ता आहिस्ता फेरना शुरू किया और अंत में निप्पल तक पहुंचकर अपने पांचों उंगलियों के अग्रभाग से धीरे धीरे सहलाकर फिर नीचे से ऊपर फेरता रहा। इसी के साथ उसके दोनों रसभरे होठों को अपने मुंह में लेकर जीभ को उसके जीभ को सहलाता रहा। मैं उसके

© 2008, www.antarvasna.com and Indian Porn Empire

होंठों को मंह के भीतर लेकर उसे चूसना शुरू कर दिया और बीच बीच में अपने दांतों से धीरे धीरे उसके होठों को काटने लगा। वो आनन्द मिश्रित दर्द से कराहने लगी। अचानक वो उठी और मेरे शर्ट का बटन खोलकर मेरे सीने में हाथ फेरने लगी। मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया और उसके नग्न सीने को अपने सीने से दबाने लगा। अब उसके निप्पल पर मै अपने निप्पल को रखकर अपने सीने से उसके सीने को सहलाना शुरू किया। उसे बहुत अच्छा लग रहा था। मुझे भी। मैंने धीरे से उसके सलवार का बंधन खोलकर उसे पूर्णतः नग्न कर दिया। अब मिसेस भाटिया का पूर्णतः नग्न जिस्म मेरे सामने था। मैंने अपनी भी पैंट तथा चड्ढी उतारकर बिलकुल नग्न उसके सामने खडा हो गया। मेरा लिंग बिल्कुल तैयार था और मिसेस भाटिया की योनि में समाने के लिए बेकरार। मेरा लिंग देखकर मिसेस भाटिया आश्चर्यचकित हो गई बोली— बाप रे इतना बड़ा ? आपको देखकर नहीं लगता कि आपका इतना बड़ा होगा। मैं उसके गाल पर प्यार से एक चपत लगाकर उसे पलंग पर बैठने का इशारा किया। वो बैठ गई तो मैंने उसे पलंग के सिरहाने टिककर बैठने के लिए कहा। अब मैंने अपने बाहों को मिसेस भाटिया के गोरे गुंदाज जंघाओं के नीचे से ले जाकर उसके पैरों को अपने पीठ पर रख दिया और अपने कानों तथा गालों को उसके जंघाओं से स्पर्श कराते हुए अपने मुंह को उसके योनिद्वार पर रख दिया। उसके दोनो हाथ पलंग के सिरहाने के दोनों ओर थे। मेरे हाथों के दोनों पंजे उसके दोनो उत्तेजित स्तनों का मर्दन कर रहे थे और मैं अपने होंठ, जीभ, दांत से उसके योनि और भगनासा को उद्वेलित कर रहा था। वो छटपटा रही थी, कराह रही थी, उसकी आनंद मिश्रित उत्तेजना पूर्ण कराहने की ध्वनि मुझे और अधिक उत्तेजित कर रही थी। आआआओं ना..... अब आ जाओ.......अब रहा नहीं जा रहा......आआआआह.........
उंउउउउउह ....
अब मुझसे भी रहा नहीं जा रहा था। अब मैंने घुटने के बल बैठकर उसके उसके दोनो पैरों को अपने कंधे पर रखा और उसकी गोरी गुंदाज जंघाओं को खींचकर भूखे भेड़िये की तरह पूर्णतया उत्तेजित अपने लिंग को उसकी योनिद्वार पर रखा और एक जोरदार शॉट मारा .... आआआआआआहह .... वो चीखी और मेरा साढ़े सात इंच लम्बा मोटा लिंग पूरा का पूरा उसके योनि में समा गया। उसके बाद मैं शॉट पर शॉट मारता चला गया — पोजिशन बदल—बदल कर। वो भी अपने नितम्बों को उठा उठाकर मेरे संभोग का पूरा आनंद उठा रही थी। लगभग आधे घंटे तक मैं अपने लिंग धर्षण से उसके योनि और संपूर्ण जननेन्द्रियों को तृप्त करता रहा, मेरी रफ्तार तेज हो गई थी और मैं चरमोत्कर्ष आनंद के साथ अपने अंदर के पुरूषत्व को लिंगद्वार से उसके योनि के भीतर...... बहुत भीतर तक स्लखित कर दिया और निढाल होकर उसके ऊपर गिर गया। वो भी मुझसे लिपटकर बहुत देर तक निढाल पड़ी थी।

अचानक हमें स्कूल का ध्यान आया। ढाई बज चुके थे। हम जल्दी जल्दी तैयार हुए। एक दूसरे को प्यार भरी नजरों से देखा....... आलिंगन बद्ध हुए और उसके होठों पर होंठ रखकर एक भरपूर चुम्बन लिया। वो मेरी ओर देखी और न जाने क्यों शरमाकर नजरें झुका ली। हम होटल से निकले। स्कूल पहुंचकर देखा अभी—अभी छुट्टी हुई है, बच्चे निकल रहें है। मैने अपने अपने बच्चे गोद में उठाकर उसे अपने बाहों में भर लिया। मैंने देखा मिसेज भाटिया ने भी अपने बच्ची को गोद में उठाकर अपने अंक में भर लिया है।

© 2008, www.antarvasna.com and Indian Porn Empire

यह कहानी आपको कैसी लगी ? आपके विचारों का मेरे Email Id arju.amb@gmail.com पर स्वागत है।

© 2008, www.antarvasna.com and Indian Porn Empire